6

बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले कारक

नीतिन कुमार ढाढोदरा*

लैटिन कहावत के अनुसार, "साहित्यकार पैदा होते हैं, साहित्यकार बनाए नहीं जा सकते" (poets are born not made)। यह सच हो सकता है कि साहित्यकार पैदा होते हैं, लेकिन इन साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा का पोषण कौन करता है, इस पर मतभेद है। बच्चों के लिए यह बहुत उपयोगी होगा यदि उन कारकों को ज्ञात किया जाए जो साहित्यिक प्रतिभा को आकार देते हैं। इसके आधार पर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों में सुषुप्त साहित्यिकता को पोषित करने की योजना को अंजाम दिया जा सकता है। इस अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों को ज्ञात करके बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों, शिक्षकों और विभिन्न संस्थाओं की भूमिका को स्पष्ट करना है। निष्कर्ष में साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों की सूची दी गई है; अभिभावकों, शिक्षकों और विभिन्न संस्थाओं की भूमिका ज्ञात करके सुझाव दिए गए हैं। इससे बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका, अभिभावकों की भूमिका, स्कूल में माहौल का निर्माण और पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों को निर्देशित किया जा सकता है। अनुसंधान के निष्कर्ष भाषा-साहित्य में बच्चों की रुचि विकसित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।

साहित्य सृजन की प्रक्रिया अत्यंत जटिल, समझ से बाहर और कुछ हद तक चमत्कारी लगे ऐसी है। साहित्यकार जब अपनी संवेदनाओं को एक निश्चित साहित्य स्वरूप में अभिव्यक्त करता है, तब क्या बनता है, उसका वर्णन करना संभव नहीं लगता है। कोई गद्य या पद्य किस तरह अवतरित होता है, यह कहना बहुत कठिन है। साहित्यकारों की संवेदना या स्फुरण कलम के माध्यम से कागज पर जब जन्म लेती है तब कौन-सी मानसिक प्रक्रिया होती है उसका विवरण देना असंभव लगता है, सृजन प्रक्रिया जटिल होती है समझने में परन्तु जब साहित्यकार की रचना की समझ बनने लगती है तो चित्त प्रसन्न हो जाता है। आनंद की अनुभूति होती है तथा और जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

लेकिन यह निश्चित है कि सृजन तभी संभव है जब लेखक में साहित्यिक प्रतिभा हो। साहित्यिक

**सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा संकाय, गुजरात विद्यापीठ, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद, गुजरात, 380 014

प्रतिभा के बिना साहित्य कागज का टुकड़ा रह जाता है; केवल मृत शब्दों का कंकाल रह जाता है, जिनमें अभिव्यक्ति की आत्मा नहीं होती। कुछ लोगों का कहना है कि सृजन के लिए जन्मजात प्रतिभा अनिवार्य है, लेकिन क्या इस प्रतिभा का आविष्करण स्वयं होता है, यह अनुसंधान का विषय है। यद्यपि साहित्य निर्माण की प्रक्रिया अवर्णनीय है, लेकिन साहित्यकार आसानी से उन चीजों का वर्णन कर सकता है, जिन्होंने उसे साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया। प्रत्येक साहित्यकार बता सकता है कि उसकी साहित्यिक अभिरुचि या साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में किन कारकों ने भूमिका निभाई है। प्रतिमा तो पहले से ही पत्थर में निहित होती है, पर उसका आविष्करण स्वयं नहीं होता, उसके लिए छैनी या हथौड़ी जैसे कारक सहायक बनते हैं तब उसमें से प्रतिमा निर्मित होती है। क्या यह साहित्यिक प्रतिभा पर भी लागू नहीं होता है? इस साहित्यिक प्रतिभा को आकार देने में किन कारकों ने भूमिका निभाई होगी? क्या यह सोचने वाली बात नहीं है?

लैटिन कहावत के अनुसार, "साहित्यिकार पैदा होते हैं, साहित्यकार बनाए नहीं जा सकते" (poets are born not made)। यह सच हो सकता है कि साहित्यकार पैदा होते हैं, लेकिन इन साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा का पोषण कौन करता है, इस पर मतभेद है। संभवतः नवागंतुकों के लिए यह बहुत उपयोगी होगा यदि उन कारकों को ज्ञात किया जाए जो साहित्यिक प्रतिभा को आकार देते हैं। इसके आधार पर स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों में सुषुप्त साहित्यिकता को पोषित करने की योजना को अंजाम दिया जा सकता है। व्यक्ति की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शैक्षणिक संस्थानों, माता-पिता या शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट किया जा सकता है। शिक्षण संस्थानों में शिक्षा से साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की योजना की जा सकती है। इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य किया था।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध का महत्व निम्नांकित है—

1. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों को ज्ञात किया गया है।
2. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारक भविष्य के बच्चों की सर्जनात्मकता को आकार देने में सहायक हो सकते हैं।
3. बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका, अभिभावकों की भूमिका, स्कूल के माहौल का निर्माण और पाठ्यक्रम-संबंधी गतिविधियों को निर्देशित किया जा सकता है।
4. अनुसंधान के निष्कर्ष भाषा-साहित्य में बच्चों की रुचि विकसित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।
5. बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा के विकास के लिए शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इस शोध के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य

1. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक कारकों को ज्ञात करना।
2. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारकों को ज्ञात करना।

3. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों की भूमिका ज्ञात करना।
4. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका ज्ञात करना।
5. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में विभिन्न संस्थाओं की भूमिका ज्ञात करना।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य गुजराती साहित्यकारों की कैफियत समाविष्ट करने वाली पुस्तकों को केंद्र में रखकर किया गया था। जिनमें गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित एवं हर्षद त्रिवेदी द्वारा संपादित पुस्तकों *कविता अने हुं* (2014), *नाटक अने हुं* (2010), *नवलकथा अने हुं* (2012) और *टूंकीवार्ता अने हुं* (2014) को ही समाविष्ट किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोधकार्य में सामाजिक विज्ञान एवं साहित्यिक शोध में विषयवस्तु विश्लेषण प्रयुक्ति प्रयुक्त की गई है।

प्रदत्त आकलन

प्रस्तुत शोधकार्य साहित्यकारों की कैफियत समाविष्ट करने वाली पुस्तकों को केंद्र में रखकर किया गया था। जिनमें गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित एवं हर्षद त्रिवेदी द्वारा संपादित पुस्तकों *कविता अने हुं* (2014), *नाटक अने हुं* (2010), *नवलकथा अने हुं* (2012) और *टूंकीवार्ता अने हुं* (2014) को ही समाविष्ट किया गया है। शोधकर्ता ने इन चारों पुस्तकों से उद्देश्यों के संबंध में प्रदत्त आकलन किया था।

प्रदत्त विश्लेषण

शोधकर्ता ने शोध उद्देश्यों के संदर्भ में प्रदत्त आकलन करने के बाद प्रदत्त का विश्लेषण करने के लिए विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया। इस पद्धति के अनुसार प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए सूचित किए गए निम्नांकित सोपानों का अनुकरण किया गया है।

1. समस्या चयन— उद्देश्य और शीर्षक का निर्धारण
2. विश्लेषण इकाईयों की परिभाषा निर्धारित करना
3. कक्षा निर्धारण या वर्गीकरण
4. नोंधपत्रक का निर्माण
5. न्यादर्श चयन
6. साहित्य/दस्तावेजों का अध्ययन
7. इकाईयों का चयन
8. इकाईयों का वर्गीकरण
9. अर्थघटन एवं निष्कर्ष

प्रदत्त विश्लेषण के लिए, प्रत्येक साहित्यकार की कैफियत का अध्ययन करके उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित करने वाले कारकों का विवरण तैयार किया गया था। प्रत्येक कारक को एक विशिष्ट प्रकार और समूह में समालोचनात्मक रूप से विचार करके समाविष्ट किया गया था कि क्या ये कारक आंतरिक या बाह्य हैं?

निष्कर्ष और सुझाव

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक कारक—
  1. जन्मजात संवेदनशीलता और विश्व को देखने की दृष्टि
  2. अन्य साहित्यकारों से प्रेरणा

3. साहित्य का विस्तृत वाचन और पढ़ने की अत्यधिक भूख
4. भाषायी अकेलापन
5. लेखन-प्रतिभा को पोषित करनेवाले शौक
6. अकेलापन
7. लेखन चुनौती को स्वीकार करने की मनोवृत्ति
8. साहित्यकारों की प्रेरणा
9. दैनंदिनी लिखने की आदत
10. नोंधपोथी लिखने की आदत

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारक—
  1. घर और पड़ौस का हवामान
  2. परिवार में सर्जनात्मक व्यक्तित्व
  3. शिक्षक और अध्यापक
  4. पाठशाला या महाविद्यालय की सहअभ्यासक प्रवृत्तियाँ
  5. साहित्यिक कृतियों का परिशीलन
  6. विशेषज्ञ व्याख्यान
  7. बच्चों की पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की पूर्ति
  8. साहित्यिक पत्रिकाएँ
  9. साहित्य सृजन या पढ़ने का शौक रखने वाले मित्र
  10. साहित्य मंडल और उसकी प्रवृत्तियाँ
  11. लेखन-प्रतिभा को पोषित करने वाली प्रवृत्तियाँ
  12. ईनाम, पुरस्कार या पारितोषिक
  13. पाठ्यक्रम में शामिल गुणवत्तापूर्ण कृतियाँ
  14. प्रोत्साहित करने वाले लोग
  15. भींतपत्र
  16. साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक
  17. साहित्यकारों का साक्षात्कार
  18. कहानियाँ और कविताओं का पाठन
  19. कहानियाँ और कविताओं का श्रवण
  20. साहित्यकारों का मार्गदर्शन
  21. लेखन प्रतियोगिताएँ
  22. लेखन शिविर
  23. भवाई, रामलीला, नुक्कड़-नाटक या नाट्यमंडल
  24. नाट्यदर्शन
  25. प्रशिक्षण
  26. नाट्य प्रतियोगिता

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों की भूमिका—
  1. घर में सर्जनात्मक प्रतिभा के लिए अनुकूल माहौल बनाना
  2. बच्चों की पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की पूर्ति को सुलभ करना
  3. साहित्यिक पत्रिका की सुविधा प्रदान करना
  4. साहित्यिक सृजन और पढ़ने में रुचि रखने वाले दोस्त बनाने की प्रेरणा देना
- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका—
  1. पढ़ने के लिए प्रेरणा
  2. लेखन के लिए मार्गदर्शन
  3. प्रभावी छंद शिक्षण
  4. भाषा और साहित्य का रोचक शिक्षण

5. विश्व की सर्वोत्तम साहित्य कृतियों का परिचय
6. साहित्यिक सहअभ्यासक प्रवृत्तियों का आयोजन
7. प्रेरणा और प्रोत्साहन
8. विशेषज्ञ व्याख्यानों का आयोजन
9. बच्चों की पत्रिका और समाचारपत्र को पढ़ने की प्रेरणा
10. साहित्यिक पत्रिका पढ़ने की प्रेरणा
11. भींतपत्र का प्रकाशन
12. साहित्यकारों के साक्षात्कार का आयोजन
13. कहानी-कविता पठन कार्यक्रमों का आयोजन
14. कहानी-कविता श्रवण कार्यक्रम का आयोजन
15. लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन
16. लेखन शिविर का आयोजन
17. गुणवत्तापूर्ण साहित्य कृतियों को पाठ्यक्रम में शामिल करना
18. नाट्य दर्शन का आयोजन
19. सृजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन
20. नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में समाज और संस्थाओं की भूमिका—
  1. ईनाम, पुरस्कार या पारितोषिक की घोषणा
  2. भवाई, रामलीला, नुक्कड़-नाटक या नाट्यमंडली का आयोजन
  3. साहित्यिक मंडली की विविध प्रवृत्तियों का आयोजन
  4. लेखन शिविर का आयोजन
  5. नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

शैक्षिक सुझाव

अभिभावकों की भूमिका के संबंध में सुझाव—

- परिवार के सदस्यों की रुचि या प्रवृत्ति अक्सर बच्चे में एक निश्चित रुचि पैदा करता है। परिवार के सदस्य में देखे जाने वाले पढ़ने, लिखने, मंचन, गायन और वादन की रुचि से बच्चा अभिभूत हो जाता है और ऐसी रुचि विकसित करता है। इसलिए माता-पिता को भी व्यक्तिगत रूप से ऐसी रुचि विकसित करनी चाहिए जो बच्चे की सृजन प्रतिभा को विकसित करने में उपयोगी हो। इसमें संगीत सुनना, किताब पढ़ना, फिल्म देखना या नाटक देखना शामिल हो सकता है। बच्चों को सिर्फ पढ़ाई के लिए मजबूर करने के बजाय ऐसी रुचि विकसित करने में सहायता करनी चाहिए।
- साहित्यकारों ने कहा है कि माता-पिता के मुख से सुने गए गीत, कहानियाँ, भजन, लोकगीत, कविता, नाटक ने उनकी रचनात्मक प्रतिभा को आकार दिया है। इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों की सृजन प्रतिभा को पोषित करने के लिए गीत, कहानियाँ, भजन, तुकबंदी, लोकगीत, कविता, नाटक गाकर और सुनाकर एक साहित्यिक माहौल प्रदान करना चाहिए। संतान को लेकर भजनवाणी और संतवाणी कार्यक्रमों में हिस्सा लेना चाहिए। बच्चे को साहित्यिक और संगीत कार्यक्रमों में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, माता-पिता के रूप में सहायक होना चाहिए।
- कुछ साहित्यकारों ने अपनी कैफियत में कहा है कि परिवार के सदस्यों में पुस्तक पढ़ने और निजी पुस्तकालय की रुचि के माध्यम से उनकी सृजन प्रतिभा का विकास हुआ है। इसलिए

अभिभावकों को बच्चों के लिए किताबें उपलब्ध करवानी चाहिए। बच्चों के लिए पत्रिकाएँ और समाचारपत्र का प्रावधान करना चाहिए। घर में एक छोटा निजी पुस्तकालय विकसित किया जाना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाओं या किताबों में से कुछ सामग्री को अपने बच्चों के सामने पढ़ा जाना चाहिए। बच्चों को सार्वजनिक पुस्तकालयों का सदस्य बनाया जाना चाहिए। पुस्तकालय का नियमित उपयोग करवाना चाहिए। बच्चों को वाचन शिविर या लेखन शिविर में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

- लेखकों के साथ साक्षात्कार या चर्चा से भी सृजन प्रतिभाओं को आकार मिला है। इसलिए माता-पिता अपने बच्चों को ऐसे कार्यक्रमों में ले जाएँ जहाँ वे विभिन्न साहित्यकारों से परिचित हों। बच्चों के साथ ऐसे कार्यक्रमों में जाने के लिए समय निकालना चाहिए।
- नाटक, कविता पाठ या सांस्कृतिक कार्यक्रम ने भी गुजराती साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों को नाटक, कविता पाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम या प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

शिक्षकों की भूमिका के संबंध में सुझाव

- शिक्षकों की पढ़ने की तत्परता छात्रों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करती है जो उसकी सर्जनात्मकता को विकसित करने के लिए उपयोगी होती है। इसलिए शिक्षकों को विस्तृत वाचन करके छात्रों को उत्कृष्ट साहित्यकृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। छात्रों को उत्कृष्ट पुस्तकों का आस्वाद एवं परिचय करवाना चाहिए।
- छात्र जब कुछ लिख कर आता है तो शिक्षक को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थी जो कुछ भी लिखता है उसे प्रोत्साहन मिले तो उसकी सर्जनात्मकता निखरेगी। पाठशाला एवं महाविद्यालयों में शिक्षकों का काम प्रेरणारूप होना चाहिए। छात्रों द्वारा लिखी गई कृतियों को सुधारने में शिक्षकों को सहायक होना चाहिए।
- छंदगान, छंदशिक्षा और छंदपाठ से छात्रों की साहित्यिक प्रतिभा का विकास होता हैं। इसलिए शिक्षकों को कविता को रोचक तरीके से पढ़ाना चाहिए। कई उदाहरणों से छंदशिक्षा को दिलचस्प बनाया जाना चाहिए। छात्रों में काव्य अभिरुचि का निर्माण करना चाहिए।
- शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट साहित्य कृतियों को रोचक तरीके से पढ़ाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य साहित्य कृतियों का परिचय एवं आस्वाद करवाना चाहिए। यह सब छात्रों के सर्जनात्मकता को परिष्कृत करता है। शिक्षकों को अधिगम के दौरान काव्यात्मक और आलंकारिक भाषा का प्रयोग करके छात्रों की सर्जनात्मकता का विकास करना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा भींतपत्र, अंक प्रकाशन, पुस्तक परिचय, पुस्तक समीक्षा, साहित्यकारों के साथ संवाद, फिल्म दर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक साक्षात्कार, पुस्तक प्रदर्शन, नाट्य मंचन, कवि सभा, मुशायरे, कहानी कथन, नाट्यीकरण, प्रार्थना सभा, संवादीकरण, वाचिकम् जैसी प्रवृत्तियाँ होनी चाहिए। ऐसी

सहअभ्यासक प्रवृत्तियाँ छात्रों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में सहायक होती हैं।

- शिक्षकों को भाषा और साहित्य का रोचक और प्रभावी शिक्षण प्रदान करना चाहिए। ऐसा स्वाध्याय देना चाहिए जिससे साहित्यिक प्रतिभा का पोषण हो। पाठ्यक्रम में गुणवत्तापूर्ण साहित्य कृतियों को शामिल करना चाहिए।
- शिक्षकों को पठन, लेखन या अभिनय से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए, नाट्य दर्शन और युवामहोत्सव का आयोजन करना चाहिए।
- बच्चों को बच्चों की पत्रिकाएँ, साहित्यिक पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साहित्यकारों के साथ साक्षात्कार आयोजित किए जाने चाहिए। पठन कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। लेखन प्रतियोगिता, सृजन प्रशिक्षण शिविर एवं लेखन शिविर का आयोजन करना चाहिए।

समाज और संस्थाओं की भूमिका के संबंध में सुझाव

साहित्यिक संस्थाओं को उत्कृष्ट साहित्य की रचना के लिए ईनाम, पुरस्कार एवं पारितोषिकों की घोषणा करनी चाहिए। विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं को समय-समय पर भवाई, रामलीला, नुक्कड़ नाटक या नाट्यमंडली का आयोजन करना चाहिए। साथ ही साहित्यिक मंडलों का गठन किया जाना चाहिए और विभिन्न प्रवृत्तियों का आयोजन किया जाना चाहिए। लेखन शिविर और नाट्य प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए।

संदर्भ

उपाध्याय, उषा (संपादक). 2006. *सृजन प्रक्रिया अने नारीचेतना*. पार्श्व पब्लिकेशन.

जोशी, उमाशंकर (संपादक). 1984. *सर्जकनी आंतरकथा*. गंगोत्री ट्रस्ट, अहमदाबाद.

जोषी, विद्युत. 2004. *साहित्य अने समाज*. पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद.

त्रिवेदी, हर्षद, (संपादक). 2010. *नाटक अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2012. *नवलकथा अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2014. *कविता अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2014. *टूंकीवार्ता अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

शाह, सुमन. 2000. *साहित्यिक संशोधन विशे*. पार्श्व पब्लिकेशन, अमहदाबाद.